स्तुति-प्रार्थना

स्तुति-प्रार्थना

(प्रत्येक हिन्दू नर-नारी के कण्ठस्थ करने तथा दैनिक व्यवहार में लाने के योग्य)

सार्वभौम संस्कृत-प्रचार कार्यालय (वाराणसी)

इस पुस्तक का प्रकाशन श्रीमती गायत्री देवीजी बाजोरिया ने सेठ नन्दलाल बाजोरिया चैरिटेबुल ट्रस्ट द्वारा कराया

आवश्यक निवेदन

इस पुस्तिका में प्रत्येक देवी देवताओं को स्तुति-प्रार्थना के कुछ श्लोक प्रकाशित किये जा रहे हैं। समस्त हिन्दू नर-नारियों तथा बालक-बालिकाओं को चाहिये कि वे इन श्लोको के स्वर को साथ शुद्ध शुद्ध कण्ठस्थ कर लें और प्रतिदिन यथा-समय इनका पाठ तथा स्मरण किया करें।

पुरोहितों से प्रार्थना है कि वे अपने सभी यजमानों को इन श्लोकों को कण्ठस्थ करा दें और जहाँ कहीं श्री सत्यनारायण जी कथा बाँचें वहाँ अन्त में कथा सुनने के लिए आए हुये सभी लोगों से एक साथ भगवान् की प्रार्थना करावें। पहले अपने बोलें और पीछे से और लोग कहें।

हम लोगों के यहाँ स्त्रियाँ साल में कई बार दुर्गाजी के स्थान पर पूजा चढ़ाने के लिए जाती हैं और अपनी-अपनी भाषा में दुर्गाजी के गीत गाती हैं परन्तु उनको

चाहिये कि वे पहले श्लोकों द्वारा दुर्गाजी की प्रार्थना कर लें तब गीत आदि गायें। ऐसा करने से दुर्गाजी अधिक प्रसन्न होंगी। प्रत्येक गृहस्थ को चाहिये कि वे अपने घर की स्त्रियों को यह अच्छी तरह समझा दें।

स्तुति-प्रार्थना के अतिरिक्त इस पुस्तिका में सूर्यार्घ, चन्द्रार्घ, तुलसी पूजा, पीपलपूजा, पीपलपूजा, गुरुनमस्कार तथा यात्रा आदि के समय कहने योग्य मन्त्र और श्लोक भी लिखे गये हैं। इन श्लोकों को भी कण्ठस्थ कर लेना चाहिये और यथासमय इनका भी उपयोग करना चाहिये।

जो सज्जन इस पुस्तक को पुनः प्रकाशित करने तथा उसके प्रचार में किसी प्रकार की सहायता करेंगे हम उनके बहुत ही कृतज्ञ होंगे। ऐसे सज्जन कार्यालय के पते से पत्र-व्यवहार करें।

जन्माष्टमी २०३७ वि०

विनीत निवेदक-

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री (सम्पादन)

।। परब्रह्मणे नमः ।।

स्तुति-प्रार्थना

श्रीकृष्ण-स्तुतिः

१- वसुदेव-सुतं देवं

कंस चाणूर - मर्दनम्।

देवकी - परमानन्दं

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

२- नमो ब्राह्मण-हिताय च

गो-ब्राह्मण-हिताय ।

जगद्धिताय कृष्णाय

गोविन्दाय नमो नमः।।

३- त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः

त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।

वेत्तासि वेद्यां च परं च धामं

त्वया ततं विश्वमनन्त-रूप।।

४- वायुर्यमाऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः

प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।

नमो नमस्तेऽस्तु सहस्त्रकृत्वः

पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।।

५- नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते

नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।

अनन्तवीर्याऽमित-विक्रमस्त्वं

सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।।

६- पितासि लोकस्य चराचरस्य

त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरोयान्।

त्वत्समाऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो

लोकत्रयेऽप्यप्रतिम- प्रभाव।।

श्री विष्णु-स्तुतिः

१- शंख-चक्रं सकिरीट-कुण्डलं

सपीत-वस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।

हार-वक्षः-स्थल-कौस्तुभ-श्रियं

नमामि देवं शिरसा चतुर्भुजम्।।

२- शान्ताकारं भुजग-शयनं

पद्मनाभं सुरेशम

विश्वाधारं गगन-सदृशं

मेघ-वर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमल-नयनं

योगिभिर् ध्यानगम्यम्

वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं

सर्व- लोकैक- नाथम्।।

श्री राम-स्तुतिः

१- नीलाऽम्बुज-श्यामल-कोमलाङ्गं

सीता-समारोपित-वाम-भागम्।

पाणौ महासायक-चारु-चापं

नमामि रामं रघुवंश-नाथम्।।

२- रामं रामानुजं सीतां, भरत भरताऽग्रजम।

सुग्रीवं वायुसूनुं च, प्रणमामि मुहुर्मुहुः।।

३- रामाय रामभद्राय

रामचन्द्राय वेधसे।

रघुनाथाय नाथाय

सीतायाः पतये नमः।।

श्री महावीर-स्तुतिः

१- मनोजवं मारुत-तुल्यं-वेगं

जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।

वातात्मजं वानर यूथ-मुख्यम्

श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

२- उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं

यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।

आदाय तेनैव ददाह लंका

नमामि तं प्राञ्जलि राञ्जनेयम्।।

३- अतुलित-बलधामं स्वर्ण-शैलाभ- देहम्

दनुज-वन-कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकल-गुण-निधानं वानराणामधीशम्

रघुपति-वरदूतं वात-जातं नमामि।।

श्री शिव-स्तुतिः

१- कर्पूर-गौरं करुणावतारम्
संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानी-सहितं नमामि।।

२- सानन्दमानन्द- वने वसन्त्
आनन्द-कन्दं हत-पाप-वृन्दम्।
वाराणसी-नाथमनाथ-नाथं
श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।

३- कर-चरण-कृतं वा कायजं कर्मजं वा
श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

श्री दुर्गा-स्तुतिः

१- जयन्ती मङ्गला काली
भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री
स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

२- सर्व- मङ्गल-माङ्गल्ये
शिवे सर्वार्थ-साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि
नारायणि नमोस्तु ते।।

३- शरणाऽगत-दीनार्त-
परित्राण-परायणे।
सर्वस्यार्ति-हरे देवि
नारायणि नमोऽस्तु ते।।

४- देवि! प्रपन्नाऽर्तिहरे ! प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसाद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि ! चराचरस्य।।

५- न मन्त्रं नो यन्त्रं

तदपि च न जाने स्तुतिमहो

न चाह्वानं ध्यानं

तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।

न जाने मुद्रास्ते

तदपि च न जाने विलपनम्

परं जाने मात-

स्त्वदनुसरणं क्लेश-हरणम्।।

श्रीगणेश-स्तुतिः

१- गजाननं भूतगणाऽधिसेवितम्

कपित्थ-जम्बूफल-चारु-भक्षणम्।

उमासुतं शोक-विनाश-कारकं

नमामि विघ्नेश्वर-पाद-पङ्कजम्।।

२- विघ्नेवराय वरदाय सुरप्रियाय

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभ्षिताय

गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

श्री सरस्वती-स्तुतिः

१- या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला
या शुभ्र-वस्त्राऽवृता
या वीणा-वर-दण्ड-मण्डित-करा
या श्वेत-पद्माऽसना।
या ब्रह्माऽच्युत-शङ्कर-प्रभतिसिर्
देवैःसदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती
निःशेष-जाड्याऽपहा।।

२- शुक्लां ब्रह्म-विचार-सार-परमाम्
आद्यां जगद्व्यापिनीम्
वीणा- पुस्तक- धारिणीमभयदां
जाड्यान्धकाराऽपहाम्।
हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं
पद्मासने सस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं
बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

३- जय जय देवि चराऽचर-सारे

कुच-युग-शोभित-मुक्ता-हारे।

वीणा-पुस्तक-रञ्जित-हस्ते

भगवति भारति देवि ! नमस्ते।।

श्री परमात्मस्तुतिः

१- यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः

स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः

वेदै साङ्ग- पद- क्रमोपनिषदैर्

गायन्ति यं सामगाः।

ध्यानाऽवस्थित-तद्गतेन मनसा

पश्यन्ति यं योगिनो

यस्तान्तं न विदुः सुरासुर-गणा

देवाय तस्मै नमः।।

२- यं शैवाः समुपासते शिव इति

ब्रह्मेति वेदान्तिनो

बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः

कर्तेति नैयायिकाः।

अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः

कर्मेति मीमांसकाः

सोऽयं नो विदधातु वाञ्छितफलं

त्रैलोक्यनाथो हरिः।।

कुछ विशेष अवसरों पर पढ़ने योग्य मन्त्र एवं श्लोक-

स्नान के समय गङ्गावाहन का मन्त्र-

गंगे च यमुने चैव

गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु-कावेरि

जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

सूर्यार्घ देने का मन्त्र-

एहि सूर्य सहस्त्रांशो

तेजाराशे जगत्पते।

अनुकम्पय मां भक्त्या

गृहाणार्घ दिवाकर।।

चन्द्रार्घ देने का मन्त्र

क्षीरोदार्णव - सम्भूत

अत्रि-गोत्र-समुद्भव।

गृहाणार्घं मया दत्तं

रोहिणी-सहित प्रभो।

पिप्पल पूजा मन्त्र

अश्वत्त्थ सुमहाभाग

सर्वदा प्रियदर्शन।

दिव्यान्न- भोजनं देहि

शत्रुणां च पराजयम्।।

आयुः प्रजां धनं धान्यं

सौभाग्यं सर्वदा सुखम्।

देहि देव महावृक्ष

त्वामहं चाऽभिवादये।।

तुलसी नमस्कार मन्त्र

नमस्ते गार्हपत्याय

नमस्ते दक्षिणाऽग्नये।

नम आहवनीयाय

तुलस्यै ते नमो नमः।

अभीष्ट-फल-सिद्धिं च

सदा देहि हरि-प्रिये।

पत्युरायुश्च भाग्यं च

कृपादृष्ट्या विलोकय।।

गुरु नमस्कार मन्त्र

अखण्ड - मण्डलाकारं

व्याप्तं येन चराचरम्।

तत् पथं दर्शितं येन

तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः

गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म

तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

लक्ष्मी पूजन मन्त्र

त्रैलोक्य -पूजिते देवि

कमले विष्णु-वल्लभे।

यथा त्वं सुस्थिरा कृष्णे

तथा भव मयि स्थिरा।।

नैवेद्य लगाने का मन्त्र

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।

गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर।।

यात्रा तथा पूजापाठ के आरंभ में पढ़ने योग्य मंगल श्लोक

१- मङ्गलं भगवान् विष्णुः

मङ्गलं गरुड़ध्वजः।

मङ्गलं पण्डरीकाक्षः

मङ्गलायतनो हरिः।।

२- सुमुखश्चैक-दन्तश्च

कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो

विघ्ननाशो विनायकः।।

३- धूम्रकेतु-र्गणाऽध्यक्षो

भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि

यः पठेत् श्रृणुयादपि।।

४- विद्यारम्भे विवाहे च

प्रवेशे निर्गमे तथा।

संग्रामे सङ्कटे चैव

विघ्नस्तस्य न जायते।।

शरीर को पवित्र करने का मन्त्र

अपवित्रः पवित्रो वा

सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं

स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

संक्षिप्त संकल्प

अद्य शुभ पुण्यतिथौ अखण्डित-सौभाग्यसुखसम्पदा युरारोग्यैश्वर्यादि-वृद्धयर्थ भगवत्प्रीतये च देवतापूजन महं करष्ये। विशेष- संकल्प में जिस देवता का पूजन करना हो उसका नाम जोड़ लेना चाहिये। यदि स्नान करना हो तो (वैशाखस्नानमहं करिष्ये, माधस्नानमहं करिष्ये ऐसा जोड़ लेना चाहिये।

कुछ कीर्तन के रूप में गाने योग्य पद -

यदि हो सके तो प्रत्येक घर के स्त्री-पुरुष को एकत्र होकर अथवा स्त्रियों और पुरुषों को अलग-अलग किसी एक समय कुछ देर के लिये श्रद्धा-भक्ति के साथ इन पदो से भवन्नाम का कीर्तन करना चाहिये। जब स्त्रियाँ किसी तीर्थ आदि में नहाने के लिए जायँ तो उस समय भी मार्ग में इन पदों से कीर्तन करते चलना चाहिए। कीर्तन के अन्त में भगवान् से प्रार्थना भी करनी चाहिये। प्रार्थना के श्लोक कहना चाहिये और पीछे अर्थ भी सबको कहना चाहिये एक आदमी पहले कहे और पीछे सब एक साथ।

१- हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।

२- श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे

हे नाथ नारायण वासुदेव।

हरे मुरारे मधुकैटभारे

निराश्रयं मां जगदीश रक्ष।

३- अच्युतं केशवं राम-नारायणं

कृष्ण-दामोदरं वासुदेवं हरिम्।

श्रीधरं माधवं गोपिका-वल्लभम्

जानकी-नायकं रामचन्द्रं भजे

४- भज गोविन्द भज गोविन्दं।

गोविन्दं भज मूढमते।।

५- शुद्धब्रह्म परात्पर राम।

कालात्मक परमेश्वर राम।।

श्रीमद्दशरथ-नन्दन राम।

कौशल्या-सुख-वर्द्धन राम।।

सर्व-चराचर-पालक राम।

सर्वभवाभय-वारक राम।।

राम राम जय राजा राम।

राम राम जय सीता राम।।

रघुपति राघव राजा राम।

पतित पावन सीता राम।।

प्रार्थना

नान्या स्पृहा रघुपते ! हृदयेऽस्मदीये

सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।

भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरा में

कामादि-दोष-रहितं कुरु मानसं च।।

हे रघुपते ! रघुवंश के स्वामी, भगवान् रामचन्द्र !

मेरे ! हृदय में और कोई अभिलाषा नहीं है। यह मैं सत्य कहता हूँ और आप तो स्वयं सबके अन्तरात्मा हैं-सबके हृदय में निवास करते हैं। हे रघुपुँगव !

रघुकल-श्रेष्ठ ! केवल मेरी यही इच्छा है कि आप अपनी पूर्ण भक्ति दीजिये

और मेरे मन को काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष आदि जितने दोष और दुर्गुण हैं उनसे रहित कीजिये।

सर्वे भवन्तु सुखिनः

सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्चन्तु

मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

संसार के समस्त प्राणी सुखी हों, सब लोग निरोग रहें, सबका कल्याण हो और कोई किसी प्रकार दुखी न हो।

यथा न मनसा वाचा

कर्मणा वापि किञ्चन।

करोमि निन्दितं कर्म

तथा बुद्धिं प्रयच्छ मे।।

हे भगवान् मैं मन, वचन तथा कर्म से कभी कोई निन्दित कर्म न करूँ, सदा सत्कर्म ही करूँ ऐसी सद्बुद्धि दीजिये।

दुर्गा-कवचम्

यहाँ नीचे श्री दुर्गापाठ से दुर्गाकवच स्तोत्र द रहे हैं। यह बहुत प्रसिद्ध स्तोत्र है और शरीर, सन्तान, परिवार तथा धन आदि सबके लिये परम कल्याणकारक मा ना गया है। हो सके तो प्रत्येक स्त्री-पुरुष को इसका प्रतिदिन स्नान के पश्चात् भक्तिपूर्वक दुर्गाजी का स्मरण कर पाठ करना चाहिये। पाठ करने के पहले कि सी पण्डित की सहायता से शुद्ध-शुद्ध पढ़ने का अभ्यास कर लेना चाहिये।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ मार्कण्डेय उवाच।।

ॐ यद् गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।

यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।। १ ।।

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारम्।

देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने।। २ ।।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।

तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।। ३।।

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।

सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।। ४।।

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकोर्तिताः।

उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना।। ५ ।।

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रु-मध्ये गतो रणे।

विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः।। ६ ।।

न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रण-संकटे।

नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःख-भयं नहि।। ७ ।।

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां सिद्धिः प्रजायते।

ये त्वां स्मृरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः।। ८ ।।

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।

ऐन्द्री गज-समारूढ़ा वैष्णवी गरुड़ासना।। ९ ।।

माहेश्वरी वृषारूढ़ा कौमारी शिखि-वाहना।

लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया।। १० ।।

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।

बाह्मी हंस-समारूढ़ा सर्वाभरण-भूषिता।। ११ ।।

इत्येता मातरः सर्वा सर्वयोग-समन्विताः।

नानाभरण-शोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः।। १२ ।।

दृश्यन्ते रथमारूढ़ा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।

शंख चक्रं गदां शक्ति हलं च मुसलायुधम्।। १३ ।।

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशवेव च।

कन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्।। १४।।

दैत्यानां देहनाशायं भक्तानामभयाय च।

धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै।। १५।।

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर-पराक्रमे।

महाबले महोत्साहे महाभय-विनाशिनि।। १६।।

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनी।

प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता।। १७।।

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।

प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी।। १८।।

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।

ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा।। १९।।

एवं दश दिशो रक्षेच्चामण्डा शववाहना।

जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।। २०।।

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।

शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।।२१।।

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी।

त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके।। २२।।

शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोतयोर्द्वारवासिनी।

कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शाङ्करी।। २३।।

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।

अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती।। २४।।

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।

घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।। २५।।

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।

ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी।। २६ ।

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी

स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।। २७ ।।

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुनीषु च।

नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी।। २८ ।।

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी।

हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी।। २९ ।।

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।

ऊरुनाथा च मेढ्रं मे गुदे महिषवाहिनी।। ३० ।।

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।

जङ्घे महाबला रक्षेत् सर्वकामप्रदायिनी।। ३१ ।।

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।

पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत् पादाधस्तलवासिनी।। ३२ ।।

नखान् द्रष्ट्रांकराली च केशाँश्चैवोर्ध्वकेशिनी।

रोमकूपेषु कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा।। ३३ ।।
रक्त-मज्जा-वसा-मांसान्यस्थि-मेदांसि पार्वती।

अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी।। ३४ ।।

पद्मावती पद्मकाशे कफे चूडामणिस्तथा।

ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु।। ३५ ।।

शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।

अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मचारिणी।। ३६ ।।

प्राणपानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।

वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणं कल्याणशोभना।। ३७ ।।

रसे रूप च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।

सत्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।। ३८ ।।

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।

यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्याञ्च चक्रिणी।। ३९ ।।

गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत् पशून्मे रक्ष चण्डिके।

पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीः भार्या रक्षतु भैरवी।। ४० ।।

पन्थानं् सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।

राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता।। ४१ ।।

रक्षाहीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन तु।

तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी।। ४२ ।।

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।

कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति।। ४३ ।।

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।

यं यं चिन्तयन्ते कामं तंतं प्राप्नोति निश्चितम्।। ४४ ।।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।

निर्भयो जायते मर्त्यः सङ्ग्रामेष्वपराजितः।। ४५ ।।

त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।

इदं तु देव्याः कवचं देवनामपि दुर्लभम्।। ४६ ।।

यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।। ४७ ।।

जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्यु-विवर्जितः।

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता-विस्फोटकादयः।। ४८ ।।

स्थावरं जङ्गमञ्चैव कृत्रिमञ्चापि यद्विषम्।

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।। ४९ ।।

भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः।

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।। ५० ।।

अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्व-राक्षसाः।। ५१ ।।

ब्रह्मराक्षस-वेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः।

नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।। ५२ ।।

मानोन्नतिर्भवेद्राज्यं तेजोवृद्धिकरं परम्।

यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्ति-मण्डित-भूतले।। ५३ ।।

जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा।

यावद् भूमण्डलं धत्ते सशैल-वन-काननम्।। ५४ ।।

तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रकी।

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।। ५५ ।।

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया-प्रसादतः।

लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते।। ५६ ।।

इति वाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्या कवचं सम्पूर्णम्।।

हिन्दुसमाज के धार्मिक कृत्यों में हवन का भी एक प्रमुख स्थान है। अतः प्रत्येक हिन्दू-परिवार में प्रतिदिन और यदि प्रतिदिन सम्भव न हो तो

एकादशी,अमावस्या तथा पूर्णिमा आदि तिथियों में तो अवश्य कुछ न कुछ हव न होना चाहिए। एतदर्थ नीचे हवन के साधारण मन्त्र दिये जा रहे हैं। हवन

करने वालों को स्नान कर, मन्त्र द्वारा पवित्र हो पवित्र आसन पर बैठकर नीचे लिखे मन्त्रों को शुद्ध-शुद्ध पढ़ते हुए हवन करना चाहिए।

ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा

ॐ विष्णवे नमः स्वाहा

ॐ शिवाय नमः स्वाहा

ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा

ॐ वरुणाय नमः स्वाहा

ॐ कुबेराय नमः स्वाहा

ॐअग्नये नमः स्वाहा

ॐ वायवे नमः स्वाहा

ॐ सूर्याय नमः स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा

ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः स्वाहा

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः स्वाहा

ॐ इष्टदेवेभ्यो नमः स्वाहा

ॐ ग्रामदेवेभ्यो नमः स्वाहा

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहा

ॐ सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः स्वाहा

अन्त में जल गिराकर तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना-

अनेन हवनेन सर्वे देवाः साङ्गाः सपरिवारः सायुधाः सशक्तिक मम सपरिवार स्य (स्त्री के लिये - सपरिवारायाः) आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टि -कर्तारो वरदा भवन्तु।